I J C R M
International Journal of Contemporary Research In Multidisciplinary

Research Article

सागर जिले में कृषि योजनाओं के प्रभाव का राजनीतिक विश्लेषण

दयाराम पटैल [1*], डॉ संगीता मुखर्जी [2]

[1] शोधार्थी, राजनीति विज्ञान, स्नातकोत्तर अध्ययन एवं अनुसंधान विभाग महाराजा छत्रसाल बुल्देलखण्ड विश्वविद्यालय छतरपुर, मध्य प्रदेश, भारत

[2] शोध निर्देशिका, प्राध्यापक (राजनीति विज्ञान), पं. दीनदयाल उपाध्याय शासकीय आर्ट एण्ड कामर्स स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सागर, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author: * दयाराम पटैल

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.20606838

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र मध्य प्रदेश के सागर जिले में केन्द्र एवं राज्य सरकार द्वारा संचालित प्रमुख कृषि योजनाओं — यथा प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि, फसल बीमा योजना, किसान क्रेडिट कार्ड, मुख्यमंत्री कृषक ब्याज माफी एवं e-NAM — के राजनीतिक आयामों का विश्लेषण करता है। अध्ययन में प्राथमिक स्रोतों (जिला कृषि विभाग, Election Commission of India, PFMS Portal) एवं द्वितीयक स्रोतों (शोध पत्रिकाएं, सरकारी प्रतिवेदन) से प्राप्त आंकड़ों का उपयोग किया गया है। निष्कर्ष दर्शाते हैं कि कृषि योजनाओं का कार्यान्वयन और राजनीतिक लाभ-हानि का आपसी संबंध अत्यंत सघन है। 2023 के विधानसभा चुनाव में भाजपा ने सागर जिले की सभी 8 सीटें जीतीं, जो DBT-आधारित योजनाओं के राजनीतिक प्रभाव का स्पष्ट संकेत है।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2583-7397
- **Received:** 10-04-2026
- **Accepted:** 03-06-2026
- **Published:** 09-06-2026
- **IJCRM:**5(3); 2026: 692-697
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

दयाराम पटैल, डॉ संगीता मुखर्जी. सागर जिले में कृषि योजनाओं के प्रभाव का राजनीतिक विश्लेषण. Int J Contemp Res Multidiscip. 2026;5(3):692-697.

Access this Article Online

www.multiarticlesjournal.com

मूल शब्द: कृषि योजनाएं, राजनीतिक अर्थव्यवस्था, सागर जिला, मतदाता व्यवहार, DBT, चुनावी राजनीति, कल्याणकारी राज्य

© 2026 दयाराम पटैल, डॉ संगीता मुखर्जी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

प्रस्तावना

भारत एक कृषिप्रधान देश है जहाँ कुल कार्यशील जनसंख्या का लगभग 45.76% कृषि एवं संबद्ध क्षेत्रों पर निर्भर है (NSSO/PLFS, 2022-23) । मध्य प्रदेश जैसे राज्य में, जहाँ GVA में कृषि का योगदान 36.32% है (MP Economic Survey, 2022-23), किसानों की समस्याएं केवल आर्थिक नहीं बल्कि गहरी राजनीतिक प्रासंगिकता रखती हैं। सागर जिला, जो बुंदेलखंड क्षेत्र का प्रवेशद्वार माना जाता है, कृषि-राजनीतिक अंतःक्रिया का एक सशक्त अध्ययन क्षेत्र है।

स्वतंत्र भारत में सरकारों ने किसानों की आय बढ़ाने, ऋण-भार कम करने तथा उत्पादकता सुधारने हेतु अनेक योजनाएं लागू की हैं। 2014 के पश्चात् केन्द्र में भाजपा सरकार के आगमन के साथ कृषि नीतियों में व्यापक परिवर्तन आया। 'प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण' (DBT) को केन्द्रीय उपकरण बनाया गया। इसी तरह मध्य प्रदेश में कांग्रेस (2018-19) एवं पुनः भाजपा (2020 से) सरकारों ने राज्य स्तरीय योजनाएं क्रियान्वित कीं।

राजनीति विज्ञान के दृष्टिकोण से, कृषि योजनाएं कल्याणकारी राज्य की अभिव्यक्ति मात्र नहीं हैं; ये वोट बैंक राजनीति, clientelism (संरक्षण-आश्रित राजनीति) और distributive politics के प्रमुख उपकरण भी बन चुकी हैं। Lowi (1972) के नीति-वर्गीकरण तथा Kitschelt & Wilkinson (2007) के 'programmatic vs. clientelistic linkage' सिद्धांत इस संदर्भ में विशेष रूप से प्रासंगिक हैं।

सागर जिले की जनसंख्या लगभग 23.55 लाख (Census 2011, प्रक्षेपित 26.8 लाख 2023) है, जिसमें 70% से अधिक ग्रामीण एवं किसान परिवार हैं। यहाँ आठ विधानसभा क्षेत्र हैं — सागर, बंडा, खुरई, देवरी, रहली, बीना, सुरखी एवं नरयावली — जिनमें 2023 चुनाव में भाजपा ने सभी आठ सीटें जीतीं।

1.1 शोध उद्देश्य

इस शोध पत्र के प्रमुख उद्देश्य हैं:

1. सागर जिले में संचालित प्रमुख कृषि योजनाओं की पहचान एवं उनके कार्यान्वयन का मूल्यांकन करना।
2. कृषि योजनाओं और चुनावी परिणामों के मध्य कारण-परिणाम संबंध का विश्लेषण करना।
3. विभिन्न राजनीतिक दलों की कृषि नीति संबंधी रणनीतियों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. योजनाओं के क्रियान्वयन में आने वाली राजनीतिक बाधाओं एवं चुनौतियों की पहचान करना।
5. नीति-निर्माताओं हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।

1.2 शोध प्रविधि

यह शोध मिश्रित-पद्धति (mixed-method) अनुसंधान दृष्टिकोण पर आधारित है। मात्रात्मक डेटा जिला कृषि विभाग (सागर), PFMS पोर्टल, Election Commission of India की रिपोर्टों तथा Ministry of Agriculture & Farmers Welfare के वार्षिक प्रतिवेदनों से संकलित किया गया है। गुणात्मक विश्लेषण हेतु 45 किसानों, 12 ग्राम पंचायत प्रतिनिधियों एवं 8 राजनीतिक कार्यकर्ताओं के साथ अर्ध-संरचित साक्षात्कार किए गए (अगस्त-दिसम्बर 2023) ।

2. सागर जिला: भौगोलिक एवं कृषि परिप्रेक्ष्य

सागर जिला मध्य प्रदेश के विंध्याचल-बुंदेलखंड क्षेत्र में 23°10' से 24°27' उत्तरी अक्षांश तथा 78°4' से 79°21' पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है। जिले का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 10,252 वर्ग किमी है, जिसमें 60.3% कृषि भूमि सम्मिलित है। बेतवा एवं सोनार नदियों की सहायक धाराएं यहाँ की सिंचाई व्यवस्था की रीढ़ हैं।

जिले में गेहूं, सोयाबीन, चना, अरहर एवं सरसों प्रमुख फसलें हैं। रबी सीजन में गेहूं तथा खरीफ में सोयाबीन की खेती सर्वाधिक होती है। हालांकि औसत भूजोत 2.3 हेक्टेयर (कृषि जनगणना 2015-16) है, किन्तु भूमि वितरण अत्यंत असमान है — लघु एवं सीमांत किसानों की संख्या कुल किसानों का 78.4% है। यही वर्ग कृषि योजनाओं का प्राथमिक लक्षित समूह भी है और राजनीतिक दलों का सबसे महत्वपूर्ण वोट बैंक भी।

सिंचाई सुविधाएं अपर्याप्त हैं — मात्र 38.6% कृषि भूमि सिंचित है (जिला कृषि विभाग, 2023) । इस कारण वर्षा पर निर्भरता बनी रहती है, और फसल बीमा जैसी योजनाएं किसानों के लिए विशेष महत्व रखती हैं।

3. सागर जिले में प्रमुख कृषि योजनाएं: एक अवलोकन

3.1 प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि (PM-KISAN)

फरवरी 2019 में आरंभ PM-KISAN योजना के अंतर्गत पात्र किसानों को प्रतिवर्ष ₹6,000 तीन किस्तों में सीधे बैंक खाते में हस्तांतरित किए जाते हैं। सागर जिले में मार्च 2023 तक 3,84,217 किसान इस योजना से लाभान्वित हो चुके थे। राष्ट्रीय स्तर पर 2022-23 में PM-KISAN के अंतर्गत कुल ₹58,201 करोड़ वितरित हुए (PIB, 2023) । राजनीतिक दृष्टि से यह योजना भाजपा सरकार की प्रमुख चुनावी उपलब्धि के रूप में प्रचारित की जाती रही है।

3.2 प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना (PMFBY)

2016 में प्रारम्भ इस योजना के अंतर्गत कुदरती आपदाओं, कीट-रोग आदि से फसल क्षति होने पर बीमा राशि प्रदान की जाती है। सागर में 2022-23 में 1,92,440 किसानों ने इसमें नामांकन कराया, किन्तु CAG रिपोर्ट (2022) के अनुसार बीमा दावा अस्वीकृति एक राष्ट्रव्यापी समस्या है। किसान संगठनों का आरोप है कि बीमा कंपनियां राजनीतिक संरक्षण में मनमाने ढंग से दावे खारिज करती हैं।

3.3 मुख्यमंत्री कृषक ब्याज माफी योजना (म.प्र.)

कांग्रेस सरकार (2018-19) द्वारा ऋण-माफी की घोषणा के पश्चात् भाजपा सरकार (2020 से) ने इसे संशोधित रूप में जारी रखा। सागर में 2,10,315 किसान लाभान्वित हुए। ऋण-माफी की राजनीति ने राज्य में चुनावी समीकरण को बार-बार प्रभावित किया है।

3.4 किसान क्रेडिट कार्ड (KCC)

KCC योजना किसानों को अल्पकालिक ऋण उपलब्ध कराती है। सागर जिले में 1,65,820 KCC धारक हैं। ग्रामीण शाखाओं पर स्थानीय नेताओं एवं सहकारी समितियों का प्रभाव इस योजना के वितरण को राजनीतिक रूप देता है।

© 2026 दयाराम पटैल, डॉ संगीता मुखर्जी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

तालिका 1: सागर जिले में प्रमुख कृषि योजनाओं की स्थिति (2022-23)

योजना का नाम	लाभार्थी (2022-23)	बजट आवंटन (करोड़ ₹)	कवरेज (%)
पीएम किसान सम्मान निधि	3,84,217	230.5	68.4
प्रधानमंत्री फसल बीमा	1,92,440	98.3	34.2
मुख्यमंत्री कृषक ब्याज माफी	2,10,315	112.7	37.4
किसान क्रेडिट कार्ड	1,65,820	84.2	29.5
राष्ट्रीय कृषि बाजार (e-NAM)	45,680	22.4	8.1
कुल/औसत	9,98,472	548.1	35.5

स्रोत: जिला कृषि विभाग सागर (2023), PFMS Portal (pfms.nic.in), Ministry of Agriculture & Farmers Welfare Annual Report 2022-23;
नोट: लाभार्थी संख्या जिला-स्तरीय अनुमानित डेटा पर आधारित है।

4. कृषि योजनाओं का राजनीतिक विश्लेषण

4.1 चुनावी राजनीति और योजना-वितरण

भारत में राजनीतिक दलों और कृषि नीतियों के संबंध को Stokes (2007) ने 'electoral clientelism' की संज्ञा दी है। सागर जिले के संदर्भ में यह प्रवृत्ति स्पष्टतः परिलक्षित होती है। चुनावी वर्षों में योजनाओं की नई घोषणाएं अथवा लाभार्थियों की संख्या में असाधारण वृद्धि देखी जाती है।

2018 के विधानसभा चुनाव से पूर्व कांग्रेस ने 'किसान कर्ज माफी' का वादा किया था, जो उसकी जीत का एक महत्वपूर्ण कारक बना। इसी तरह, 2020 में जब भाजपा सत्ता में वापस आई, तो PM-KISAN की किस्तें त्वरित गति से जारी की गईं। 2023 के चुनावों में भाजपा ने 'लाडली बहना' के साथ-साथ किसान कल्याण को केन्द्रीय मुद्दा बनाया परिणामस्वरूप जिले की सभी 8 सीटें भाजपा ने जीतीं।

Indian Political Science Review (2023) में प्रकाशित एक अध्ययन के अनुसार, DBT योजनाओं की घोषणा और चुनावों के बीच औसत अंतराल महज 4.2 महीने है। सागर के तीन विधानसभा क्षेत्रों में हमारे साक्षात्कारों में 67% किसानों ने स्वीकार किया कि वे उस दल को वोट देते हैं जिससे उन्हें 'अधिक लाभ' मिलने की संभावना होती है।

4.2 विधानसभा क्षेत्रवार राजनीतिक-कृषि सहसंबंध

तालिका 2: सागर जिले में विधानसभा क्षेत्रवार 2023 चुनाव परिणाम एवं कृषि सहसंबंध

विधानसभा क्षेत्र	प्रमुख दल (2023)	कृषि वोट % (अनुमानित)	योजना लाभार्थी % (अनुमानित)	2023 चुनाव परिणाम
सागर (No.41)	भाजपा	42	71.2	भाजपा विजयी (शैलेन्द्र जैन)
बंडा (No.42)	भाजपा	68	58.4	भाजपा विजयी (वीरेन्द्र सिंह)
खुरई (No.36)	भाजपा	55	74.8	भाजपा विजयी (भूपेन्द्र सिंह)
देवरी (No.43)	भाजपा	74	62.3	भाजपा विजयी (बृजबिहारी पटेरिया)
रहली (No.39)	भाजपा	79	55.7	भाजपा विजयी (गोपाल भार्गव)
बीना (No.35)	भाजपा	48	66.9	भाजपा विजयी (निर्मला सप्रे)
सुरखी (No.37)	भाजपा/कांग्रेस*	71	61.8	भाजपा विजयी (गोविन्द राजपूत)
नरयावली (No.40)	भाजपा	71	68.5	भाजपा विजयी (प्रदीप लारिया)

स्रोत: Election Commission of India (eci.gov.in/results), OneIndia Election Data 2023; * सुरखी ऐतिहासिक रूप से swing seat रही है (1980-2023 में BJP 5 बार, INC 5 बार); कृषि वोट % एवं योजना लाभार्थी % शोधकर्ता के क्षेत्र अनुसंधान पर आधारित अनुमान हैं।

महत्वपूर्ण तथ्य: 2023 विधानसभा चुनाव में भाजपा ने सागर जिले की सभी 8 विधानसभा सीटें जीतीं। रहली में गोपाल भार्गव ने 72,800 मतों के विशाल अंतर से जीत दर्ज की। यह परिणाम कृषि योजनाओं, विशेषकर DBT आधारित PM-KISAN, के राजनीतिक प्रभाव का प्रबल प्रमाण है।

तालिका 2 से स्पष्ट है कि जहाँ कृषि वोट प्रतिशत अधिक है (रहली 79%, नरयावली 71%), वहाँ भाजपा का वर्चस्व प्रबल रहा। 2023 में सागर जिले का परिणाम भाजपा के लिए राज्य स्तरीय सफलता (163/230 सीटें) से भी बेहतर रहा। सुरखी एकमात्र ऐसी सीट रही जहाँ जीत का अंतर मात्र 2,178 था, जो इस ऐतिहासिक swing seat की प्रतिस्पर्धात्मक प्रकृति को दर्शाता है।

4.3 कृषि उत्पादन एवं योजना-प्रभाव: एक कालक्रमिक विश्लेषण

तालिका 3: सागर जिले में कृषि उत्पादन एवं योजना-संबद्ध वित्तीय लाभ (2018-2024)

वर्ष	खाद्यान्न उत्पादन (लाख मे.टन)	MSP लाभ (करोड़ ₹)	किसान आय वृद्धि (%)	कर्ज माफी (करोड़ ₹)
2018-19	18.42	312.4	4.2	185.3
2019-20	19.87	348.6	5.8	210.7
2020-21	17.63	298.2	2.1	124.5
2021-22	21.45	412.8	8.4	248.9
2022-23	23.18	489.6	11.2	312.4

© 2026 दयाराम पटैल, डॉ संगीता मुखर्जी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

2023-24	24.72	534.2	13.7	—

स्रोत: Directorate of Agriculture MP (doa.mp.gov.in), Agricultural Statistics at a Glance 2023 (DAC&FW), Madhya Pradesh Economic Survey 2022-23;
नोट: जिला-स्तरीय खाद्यान्न उत्पादन एवं MSP लाभ के आंकड़े जिला कृषि विभाग के अनुमानों पर आधारित हैं।

तालिका 3 के आंकड़े दो महत्वपूर्ण तथ्य उद्घाटित करते हैं: (i) 2020-21 में COVID-19 के कारण उत्पादन एवं किसान आय में गिरावट आई; (ii) 2021-22 के बाद खाद्यान्न उत्पादन और MSP लाभ दोनों में निरंतर वृद्धि हुई है, जो बेहतर कार्यान्वयन एवं भूमि सुधारों का संयुक्त परिणाम है।

4.4 दलीय प्रतिस्पर्धा एवं नीतिगत अभिसरण

जब कांग्रेस ने 2018 में 'किसान कर्ज माफी' का वादा कर सत्ता हासिल की, तो भाजपा के लिए यह एक महत्वपूर्ण संकेत था। Mehta & Mukhopadhyay (2019) ने अपने अध्ययन में इसे 'competitive populism' कहा है। सागर के किसान नेताओं के अनुसार, पिछले दस वर्षों में दोनों प्रमुख दलों के कृषि घोषणापत्र अधिकाधिक समान होते जा रहे हैं।

Jaffrelot & Tillin (2017) के 'subnational politics' के सिद्धांत को सागर जिले के संदर्भ में लागू करने पर पाया जाता है कि जाति-आधारित वोट बैंक और कृषि योजनाओं का वितरण परस्पर जुड़े हुए हैं। कुर्मी, लोधी एवं अहीर जातियाँ — जो जिले में बड़े किसान समुदाय हैं — भाजपा की ओर झुकती हैं, जिसकी पुष्टि 2023 के चुनावी परिणामों से होती है।

4.5 केन्द्र-राज्य-स्थानीय शक्ति त्रिकोण

तालिका 4: कृषि योजनाओं में राजनीतिक शक्ति वितरण का विश्लेषण

राजनीतिक पहलू	केन्द्र सरकार भूमिका	राज्य सरकार भूमिका	स्थानीय प्रशासन
योजना निर्माण	नीति-निर्धारण व बजट	क्रियान्वयन नियम	जिला स्तरीय लक्ष्य
लाभार्थी चयन	राष्ट्रीय मानदंड	राज्य सूची अनुमोदन	ग्राम पंचायत सत्यापन
राजनीतिक प्रचार	PM भ्रमण/रैलियाँ	CM घोषणाएं	विधायक/सांसद दावे
निधि प्रवाह	DBT केन्द्रीय पोर्टल	राज्य राजकोष	जिला कोषालय
निगरानी तंत्र	PFMS/iGOT	MPREGAS/MP-Agri	जिला कलेक्टर

स्रोत: लेखक का स्वयं का विश्लेषण; Ministry of Agriculture Annual Report 2022-23; MP State Agriculture Policy 2022

भारतीय संविधान की सातवीं अनुसूची में कृषि राज्य सूची का विषय है, परन्तु केन्द्र सरकार समवर्ती एवं संघीय योजनाओं के माध्यम से इस क्षेत्र में गहरी पैठ बनाए हुए है। PM-KISAN जैसी केन्द्रीय योजना सीधे किसानों के खातों में धन भेजती है, जिससे राज्य सरकार की मध्यस्थता समाप्त होती है। इसे Bardhan & Mookherjee (2006) ने 'fiscal centralization' की राजनीति का एक उदाहरण माना है।

सागर जिले में, जहाँ 2023 तक राज्य में भाजपा एवं केन्द्र में भी भाजपा की सरकार है, 'double benefit' का दावा स्थानीय सांसद एवं विधायकों द्वारा प्रचार में किया जाता है। 2018-19 में जब कांग्रेस राज्य में सत्तारूढ़ थी, तब PM-KISAN की किस्तों के वितरण में देरी के आरोप-प्रत्यारोप केन्द्र-राज्य संघर्ष का प्रतीक बने।

5. कृषि योजनाओं के कार्यान्वयन में राजनीतिक चुनौतियाँ

5.1 डेटा एन्ट्री एवं पात्रता संबंधी समस्याएं

PM-KISAN के लिए जमीन रिकॉर्ड का डिजिटलीकरण अनिवार्य है, परन्तु सागर जिले में 2023 तक भी 22.5% किसानों के भूमि अभिलेखों में विसंगतियां पाई गईं (जिला कलेक्टर रिपोर्ट, 2023)।

5.2 बिचौलियों की भूमिका

DBT के बावजूद, सहकारी समितियाँ, पंचायत सचिव और स्थानीय नेता योजना-प्रवेश में गेटकीपर की भूमिका निभाते हैं। साक्षात्कार में 34% किसानों ने कहा कि उन्होंने आवेदन प्रक्रिया में किसी 'सहायक' को भुगतान किया।

तालिका 5: कृषि योजनाओं में प्रमुख राजनीतिक-प्रशासनिक समस्याएं

समस्या	प्रभावित किसान (अनुमानित %)	राजनीतिक प्रतिक्रिया	नीति परिणाम
डेटा एन्ट्री त्रुटियाँ	18.4	विपक्ष द्वारा मुद्दा	पोर्टल सुधार 2022
भ्रष्टाचार/बिचौलिए	12.7	जाँच समिति गठन	ई-पेमेंट अनिवार्य
देरी से भुगतान	31.2	आंदोलन/धरना	48 घंटे नियम लागू
बहिष्कृत पात्र किसान	22.5	कोर्ट याचिकाएं	पुनः सर्वेक्षण 2023
बीमा दावा अस्वीकृति	28.9	किसान संगठन आंदोलन	विवाद निवारण तंत्र

स्रोत: CAG Report on PMFBY (2022), जिला कृषि विभाग सागर (2023), RTI आवेदन डेटा, लेखक का क्षेत्र अनुसंधान (2023);
नोट: प्रभावित किसान % क्षेत्र सर्वेक्षण आधारित अनुमान हैं।

5.3 योजनाओं की राजनीतिक अर्थव्यवस्था

Bardhan (1984) ने 'dominant proprietary classes' के सिद्धांत में बताया था कि भारत में बड़े किसान, व्यापारी एवं नौकरशाह मिलकर कल्याणकारी योजनाओं को अपने पक्ष में मोड़ लेते हैं। MSP का व्यावहारिक प्रभाव सीमित है — सागर में 2022-23 में केवल 31.7% किसान सरकारी खरीद केन्द्रों पर बेच पाए। शेष को बाजार में औने-पौने दाम पर बेचना पड़ा।

© 2026 दयाराम पटैल, डॉ संगीता मुखर्जी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

6. सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य एवं वैचारिक ढांचा

6.1 Distributive Politics सिद्धांत

Dixit & Londregan (1996) के 'swing voter model' के अनुसार, राजनेता उन मतदाताओं को अधिक लाभ देते हैं जो 'swing' होते हैं। सागर में सुरखी विधानसभा क्षेत्र — जहाँ 1980 से अब तक भाजपा और कांग्रेस 5-5 बार जीती हैं — इस सिद्धांत का सटीक उदाहरण है।

6.2 Welfare State और Political Legitimacy

Pierson (1994) के अनुसार एक बार स्थापित कल्याणकारी योजनाएं 'path dependence' के कारण बंद करना राजनीतिक रूप से लगभग असंभव हो जाता है। यही कारण है कि भाजपा ने 2020 में वापस आने के बाद भी कांग्रेस की ऋण-माफी को तत्काल बंद नहीं किया।

6.3 Patron-Client संबंध एवं Clientelism

Scott (1972) के Patron-Client सिद्धांत के अनुसार, ग्रामीण राजनीति में व्यक्तिगत संरक्षण-आश्रय संबंध नीतिगत निर्णयों को गहराई से प्रभावित करते हैं। सागर जिले में विधायक, ग्राम पंचायत प्रमुख एवं कृषि विभाग के अधिकारियों का त्रिकोण इस सिद्धांत का जीवंत उदाहरण है।

7. निष्कर्ष एवं नीति सुझाव

7.1 प्रमुख निष्कर्ष

इस अध्ययन से निम्नलिखित महत्वपूर्ण निष्कर्ष निकलते हैं:

- सागर जिले में 2023 में भाजपा ने DBT-आधारित कृषि योजनाओं के बल पर सभी 8 विधानसभा सीटें जीतीं — यह कृषि योजनाओं की चुनावी शक्ति का ठोस प्रमाण है।
- DBT ने मध्यस्थों की भूमिका कुछ हद तक कम की है, किन्तु डेटा विसंगतियाँ एवं डिजिटल निरक्षरता नई बाधाएं बन गई हैं।
- भाजपा एवं कांग्रेस दोनों के कृषि कार्यक्रम 'competitive populism' की ओर अग्रसर हो रहे हैं, जो दीर्घकालिक राजकोषीय स्थिरता के लिए चिंताजनक है।
- लघु एवं सीमांत किसान, जो योजनाओं के मुख्य लक्ष्य हैं, वे अभी भी राजनीतिक-प्रशासनिक बाधाओं के कारण पूर्ण लाभ नहीं उठा पाते।
- 2021-22 से खाद्यान्न उत्पादन एवं किसान आय में सकारात्मक वृद्धि दृष्टिगोचर है।

7.2 नीति सुझाव

1. भूमि अभिलेखों का त्वरित डिजिटलीकरण एवं SVAMITVA योजना का विस्तार।
2. फसल बीमा दावा-निपटान में पंचायत-स्तरीय जन-सुनवाई अनिवार्य की जाए।
3. MSP खरीद केन्द्रों की संख्या एवं परिवहन सुविधाओं में वृद्धि।
4. योजना-प्रदर्शन का स्वतंत्र एवं समयबद्ध मूल्यांकन — CAG अथवा स्वतंत्र संस्थाओं द्वारा।
6. कृषि योजनाओं को दलीय लोगो एवं नेताओं के चित्र से मुक्त रखने हेतु नीतिगत निर्देश।

संदर्भ सूची

1. Bardhan P. The Political Economy of Development in India. Oxford University Press; 1984.
2. Bardhan P, Mookherjee D. Decentralisation and accountability in infrastructure delivery in developing countries. The Economic Journal. 2006;116(508):101-127.
3. भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक. प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना पर रिपोर्ट. नई दिल्ली: भारत सरकार; 2022.
4. Dixit A, Londregan J. The determinants of success of special interests in redistributive politics. Journal of Politics. 1996;58(4):1132-1155.
5. मध्यप्रदेश कृषि विभाग. कृषि सांख्यिकी 2022-23. भोपाल: मध्यप्रदेश शासन; 2023.
6. भारत निर्वाचन आयोग. मध्यप्रदेश विधानसभा आम चुनाव 2023 सांख्यिकीय रिपोर्ट. नई दिल्ली; 2023.
7. भारत सरकार, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय. वार्षिक प्रतिवेदन 2022-23. नई दिल्ली; 2023.
8. Jaffrelot C, Tillin L. Populism in India. In: The Oxford Handbook of Populism. Oxford University Press; 2017.
9. Kitschelt H, Wilkinson S. Patrons, Clients, and Policies. Cambridge University Press; 2007.
10. Kohli A. Poverty amid Plenty in the New India. Cambridge University Press; 2012.
11. Lowi TJ. Four systems of policy, politics, and choice. Public Administration Review. 1972;32(4):298-310.
12. मध्यप्रदेश आर्थिक सर्वेक्षण. आर्थिक मध्य प्रदेश 2022-23. वित्त विभाग, मध्यप्रदेश शासन; 2023.
13. Mehta PB, Mukhopadhyay M. Competitive populism and farmer welfare in India. Indian Political Science Review. 2019;53(2):45-68.
14. राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (NSO). पीएलएफएस 2022-23. भारत सरकार; 2023.
15. सार्वजनिक वित्तीय प्रबंधन प्रणाली (PFMS). PM-KISAN DBT डेटा; 2024.
16. प्रेस सूचना ब्यूरो (PIB). PM-KISAN रिपोर्ट 2022-23. भारत सरकार; 2023.
17. Pierson P. Dismantling the Welfare State. Cambridge University Press; 1994.
18. सागर जिला कृषि विभाग. वार्षिक प्रगति रिपोर्ट 2022-23. मध्यप्रदेश शासन; 2023.
19. सागर जिला कलेक्टर कार्यालय. सामाजिक-आर्थिक प्रोफाइल 2023. सागर; 2023.
20. Scott JC. Patron-client politics and political change in Southeast Asia. American Political Science Review. 1972;66(1):91-113.

© 2026 दयाराम पटैल, डॉ संगीता मुखर्जी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

21. SLBC मध्यप्रदेश. कृषि एवं ग्रामीण विकास रिपोर्ट 2022-23. भोपाल; 2023.
22. Stokes SC. Is vote buying undemocratic? In: Elections for Sale. Lynne Rienner; 2007.
23. Swaminathan MS. National Commission on Farmers Report (Vol V). भारत सरकार; 2006.
24. Varshney A. Democracy, Development, and the Countryside. Cambridge University Press; 1998.

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–Non-commercial–No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) license. This license permits sharing and redistribution of the article in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted under this license.

About the Author

दयाराम पटैल राजनीति विज्ञान में शोधार्थी हैं, जो स्नातकोत्तर अध्ययन एवं अनुसंधान विभाग, महाराजा छत्रसाल बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, छतरपुर, मध्य प्रदेश, भारत से संबद्ध हैं। उनके शोध रुचि क्षेत्र में भारतीय राजनीति, शासन व्यवस्था एवं समकालीन राजनीतिक मुद्दों का अध्ययन शामिल है। वे अकादमिक शोध एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन में सक्रिय हैं।

डॉ. संगीता मुखर्जी राजनीति विज्ञान की प्राध्यापक एवं शोध निर्देशिका हैं, जो पं. दीनदयाल उपाध्याय शासकीय आर्ट एंड कॉमर्स स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सागर, मध्य प्रदेश, भारत में कार्यरत हैं। उनके शोध एवं शिक्षण क्षेत्र में भारतीय राजनीति, शासन व्यवस्था और सार्वजनिक नीति अध्ययन शामिल हैं। वे अकादमिक शोध मार्गदर्शन में सक्रिय रूप से संलग्न हैं।

© 2026 दयाराम पटैल, डॉ संगीता मुखर्जी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/